Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 4, Issue 2 - 2019

मंचीय कलाओं के संवर्धन में समाचार पत्रों की भूमिका- जयपुर में सांस्कृतिक पत्रकारिता कें सन्दर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन

सालेहा गाजी*

शोध सार संक्षेपिका

पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला है। जनमानस को अभिव्यक्त करने की जीवन्त विधा पत्रकारिता है। पत्रकारिता अपने सांस्कृतिक परिवेश से पूर्ण रूप् से प्रभावित होती है। सांस्कृतिक परिवेश को अभिन्न अंग है मंचीय कलाऐं - गायन, वादन, नृत्य अभिनय.... कला हमेशा समय के साथ कदमताल मिलाकर चलती है। ये मात्र मनोरंजक ही नहीं होती वरन् प्रेरक भी होती हैं और परिवर्तन की सूचक भी होती हैं। मीडिया और कलाऐं अन्योन्यश्रित हैं एक दूसरे का साथ पाकर इनका संवर्धन होता है। पत्रकारिता अपने दौर की कलाओं का दस्तावेजीकरण करती है। आज तकनीकी विकास के युग में पूरी दुनिया एक global village का रूप ले चुकी है इस प्रगति ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है कला जगत भी इससे अछूता नहीं है घर बैठकर सबकुछ देखना सुनना सुलभ हो गया है ऐसे में भी समाचार पत्रों की भूमिका है। मंचीय कलाओं के प्रचार प्रसार और विकास में सांस्कृतिक पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका है ये समाज के लिये संजीवनी का काम करती है। स्थानीय सांस्कृतिक आयोजनों की सूचना मात्र हमें समाचार पत्र नही देते वरन् पाठकों में अभिरूचि भी जागृत करते हैं। इनसे पाठकों में कलागत रूझान जागता है।

प्रस्तुत शोध पत्र उत्सवों की नगरी जयपुर शहर के संदर्भ में है जिससे ये सुस्पष्ट होता है कि मीडिया के बिना कलाऐं आगे नहीं बढ सकती। समाचार पत्रों में कला आयोजनों और मंचीय प्रस्तुतियों के बेहतर कवरेज की वृहदतर संभावना है हालांकि जयपुर से प्रकाशित और यहॉ सर्वाधिक पढे जाने वाले 2 हिन्दी समाचार पत्रों दैनिक भास्कर और राजस्थान पत्रिका के अन्तर्वस्तु विश्लेषण से पता चलता हैं कि यहॉ सांस्कृतिक पत्रकारिता का परिदृश्य अच्छा है। आज के समय में कलाओं को जानसाधारण तक पहुंचाने में मंचीय कलाओं के आयोजनों की ब्रांडिंग करने में समाचार पत्रों का विशेष महत्व है। बहुत से बदलावों से गुजरने के बाद भी चाहे समाचार पत्रों में मंचीय कलाओं के लिये स्थान सिकुड़ गया है किन्तु इसी स्वीकार्यता में वृद्धि हुई है। ये पाठक का कलागत रूझान बढाता है।

*पीएचडी रिसर्च स्कॉलर मीडिया स्टडीज डिपार्टमेन्ट, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

मुख्यशब्दः समाचार पत्र, सांस्कृतिक पत्रकारिता, मंचीय कलायें, कलात्मक आयोजन, कलागत रूझान।

विषय वस्तु परिचय

मनुष्य का मस्तिष्क सदैव जिज्ञासु रहा हैं उसके आस पास जो कुछ घटित होता है वह उसे जानने के लिए हमेशा उत्सुक रहता है। हर्बट ब्रूकर ने पत्रकारिता की व्याख्या करते हुए कहा है कि ये वो माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में उस दुनिया के बारे में सारी सूचनाऐ इकट्ठी करते हैं जिन्हें हम स्वयं जान नहीं सकते। पत्रकारिता सदैव समाज को प्रभावित करती रही है। समाज में जो हो रहा है, जो होगा और जो होना चाहिये, पत्रकार इन सभी पर नज़र रखता है। पत्रकारिता का उद्देश्य मात्र वास्तविकता को सामने लाना और सूचना देना नहीं है वरन पत्रकारिता में बहुजन हिताय की भावना परिलक्षित होनी चाहिये। इस प्रकार पत्रकार का हाथ हमेशा समाज की नब्ज़ पर होता है ।

आज मीडिया को हम अखवार रेडियों -टीवी सोशल मीडिया के समुच्चय के रूप में देखते हैं प्रिन्ट मीडिया में समाचार पत्रों की बात करे तो इसे स्पष्ट करते हुए डा. अर्जुन तिवारी ने लिखा है- ''लोकमानस को अभिव्यक्त करने की जीवन्त विधा ही पत्रकारिता है जिससे सामयिक सत्य मुखरित होते हैं। समय और समाज के सन्दर्भ में सजग रह कर नागरिको में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं। जन संवेदना के संचार का सर्व सुलभ प्रभावकारी जन माध्यम ही पत्रकारिता है। युगबोध के प्रमुख तत्वों के साथ ही मानवता के विकास और विचारोत्तेजन का राजमार्ग ही पत्रकारिता है जिससे जन जीवन पल पल उद्वेलित होता रहता है।

सांस्कृतिक पत्रकारिता

पत्रकारिता अपने सांस्कृतिक परिवेश से पूर्ण रूप से प्रभावित होती है। पत्रकारिता समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ मेल जोल के विकास में सहायक हैं। हम कला या सांस्कृतिक पत्रकारिता की बात करे तो यह समाज को प्रभावित करती है और समाज से प्रभावित भी होती है। कलाओं के लिए यह कहा जाता है कि ये समाज की अभिव्यक्ति है साथ ही इन्हे परिवर्तन की अभिव्यक्ति भी माना जाता है। हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी भारत के प्रथम पत्रकार थे जिन्होने 1904 में पत्रकारों के शिक्षण प्रशिक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया था। आज देश के सैकडों विश्वविद्यालयों और निजी संस्थानों में पत्रकारिता और जनसंचार के पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं मुख्य विषय जिनमें सांस्कृतिक पत्रकारिता एक मुख्य प्रकार है। मीडिया,कला संस्कृति, कलाऐं जीवन के बहुआयामी विकास का मूल मंत्र है। कलाओं की अपनी एक ताकत होती है। कला का अपना एक संदेश होता है। कला संवेदनाओं की अभिव्यक्ति है यही संवेदनाऐं मनुष्य को मनुष्य बनाती है।

हिन्दी समाचार पत्रों का विकास क्रम समय के साथ साथ वट वृक्ष के रूप में बढ़ता रहा। विविध कलाओं को इनमें निरन्तर समुचित स्थान मिला। भारतीय कलाओं का स्वरूप अत्यन्त विराट है।कलाओं के विकास क्रम पर नज़र डाले तों इसमें मानव के विकास का इतिहास का मात्र तात्कालिक महत्व ही नहीं है येअपनी दौर की कलाओं का दस्तावेजीकरण करती है। सांस्कृतिक पत्रकारिता का अतीत बहुत शानदार है। सांस्कृतिक पत्रकारिता के माध्यम से

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

पाठकों को ना सिर्फ विचारको चितको की विचारधारा की जानकारी मिलती है वरन् सोचने की एक नई दिशा मिलती है। समाचार पत्र कवरेज उदीयमान कलाकारों का मार्ग प्रशस्त करता है और उनका प्रेरणा स्रोत भी बनता है । नव संस्कृति के संवाहक के रूप में मीडिया की सशक्त भूमिका है। इसके विविध रूप सांस्कृतिक संचार में सहायक है।

सांस्कृतिक और पारम्परिक राज्यों में राजस्थान मुख्य माना जाता है।ये प्रान्त दुनिया भर में अपनी कला संस्कृति के माध्यम से पधारो म्हारे देश का उद्घोष कर रहा है। राजस्थान सिर्फ महलों, किलोंऔर हवेलियों की ही धरती नहीं है वरन् रंग बिरंगी लोक संस्कृति के लिए भी जानी जाती है। यहां का संगीत जिनमें पश्चिमी राजस्थान के लंगामांगणियार अब पूरी दुनिया में अलग पहचान रखते हैं। लोक नृत्यों में घूमर, चरी, चकरी, भवाई भी अत्यन्त लोकप्रिय है। कालबेलिया नृत्य तो यूनेस्कोकी हेरिटेज लिस्ट में शामिल हो चुका है। शास्त्रीय नृत्य शैली की बात करेंतो कथक में जयपुर घराना अपना अहम मकाम रखता है।

सांस्कृतिक रूप से अत्यन्त समृद्ध जयपुर के कलाकारों के पूर्वजों को राज्याश्रय मिला जिससे उन्होने एकाग्रता के साथ विभिन्न कलाओं को आगे बढाया। आज स्थिति बिल्कुल अलग है पर्याप्त प्रश्रय के अभाव में कई कलाकार अपनी पुरानी कलाओं को छोडकर अन्य व्यवसाय में संलग्न है। जयपुर के कलात्मक उत्सव मेले विश्वविख्यात है इनके बारे में पूरी दुनिया में मीडिया में लिखा गया है लेकिन राज्य के कलाकारो को सटीक सांस्कृतिक नीति की आवश्यकता है।

राजधानी जयपुर उत्सवों की नगरी है। यहां के लोगों का उत्सवों के प्रति आकर्षण देखते ही बनता है। यहां के आयोजन शहर के सांस्कृतिक कलेवर में नए रंग भरते है। जयपुर के संस्थापक महाराजा सवाई जयसिंह ने देश के कोने-2 से कलाकारोंऔर हुनरमंदों को लाकर जयपुर शहर में बसाया। उन्होंने कलाकारों को सम्मान और प्रश्रय दिया। जिससे दस्तकारी, मीनाकारी, मूर्तिकला, चित्रकला, टेराकोटा, ब्लू पाटरी, संगीत नृत्य सभी में जयपुर की विश्वव्यापी पहचान बनी। यहां वर्ष पर्यन्त कलात्मक आयोजन होते हैंऔर बडी संख्या में सैलानियों को भी आकर्षित करते हैं।जयपुर कला का धनी है। यहां की माटी ने यशस्वी कलाकार दिये है।

जयपुर से प्रकाशित हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों मेंप्रमुख है- दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, दैनिक नवज्योति, राष्ट्रदूत, डेली न्यूज, पंजाब केसरी, समाचार जगत आदि। इनमे सबसे अधिक पढे जाने वाले समाचार पत्र है दैनिक भास्कर और राजस्थान पत्रिका। 4.8 लाख प्रतियां रोजाना के हिसाब से दैनिक भास्कर पहले नम्बर पर है और 4.4 लाख कापीज के साथ राजस्थान पत्रिका दूसरे नम्बर पर है।

जयपुर में होने वाले कलात्मक और सांस्कृतिक आयोजनों से कलाओं के आस्वादन का संस्कार पैदा होता है (नई पीढी में) कलाओं का समुचित मीडिया कवरेज होने से ये अनजान पाठकों से जुड़ती है। कला और कलाकार का उद्देश्य रस की उत्पत्ति जिसे हम सामान्य भाषा में मनोरंजन कहते है। किन्तु कलायें मात्र मनोरंजन तक ही सीमित नहीं होती ये प्रेरक भी होती हैं परिवर्तन की सूचक भी होती हैं।सांस्कृतिक पत्रकारिता सामाजिक सरोकारोंसे जुड़ी है। ये संस्कृति के खतरों के प्रति सचेत करती है। सांस्कृतिक पत्रकारिता कला पत्रकारिता पत्रकारिता की एक मुख्य शाखा है जो दृश्यकला, मंचीय कला, स्थापत्य कला, सिनेमा, संगीत, रंगमंच सभी से जुड़ी गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत करती हैं।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

Cultural Beat को कवर करने वाले पत्रकार सांस्कृतिक संवाददाता कहलाते हैं।

हमारे यहां प्राचीनकाल से कलायें शुरू शिष्य परम्परा के माध्यम से फलीभूत हो रही है। आज का युग प्रचार का युग है प्रचार आज के युग की आवश्यकता है और कला का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। किसी भी स्थान की सांस्कृतिक पत्रकारिता एक प्रकार से स्थानीय सांस्कृतिक उद्यमिता है। सांस्कृतिक पत्रकार कला अनुभूति जगाता हैं सांस्कृतिक पत्रकार भी कलाकार है वह शब्दों का चितेरा होता है। सांस्कृतिक पत्रकार अपनी Punchy style और चित्रात्मक भाषा के लिए जाना जाता है। ये कला आयोजनो के बस में ही नहीं कलाकारोंके जीवन के बारे में भी लिखते है। कलाकारों को पहचान दिलाने में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है।

कला हमेशा समय के साथ कदमताल मिलाकर चलती है। कलाकार के लिए अनुभव स्मृति और उसके सरोकार ही उसकी पूंजी है। कलाकार समाज के लिए सबसे बड़ा जादूगर होता है और जादूगरी कला के रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। कलाकार और समाज के बीच दो तरफा संवाद की गुंजाइश हमेशा रहती है इसमें मीडिया की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

उपलब्ध संबधित साहित्य की समीक्षा

किसी भी शोध कार्य की भूमिका उस विषय वस्तु पर किये गए पूर्ण अध्ययन से तैयार होती है। ये अध्ययन हमारे समक्ष पुस्तकों लेखों और ग्रन्थों के माध्यम से प्रस्तुत होते है। इस दृष्टि से प्रस्तुत विषय वस्तु पर उपलब्ध पुस्तकों लेखों की समीक्षा प्रस्तुत की जा रही है जिनके आधार पर अध्ययन की प्रासंगिकता को सुनिश्चित किया गया है।

इस विषय पर वैश्वीकरण के परिदृश्य में प्रिन्ट मीडिया पर शोध किया गया है उसके सार में समाहित है, मीडिया सांस्कृतिक पत्रकारिता को हिन्दी भाषा को निरूतर आगे बढाने में सहायक है। (वृन्दा सेनगुप्ता सतीश कुमार अग्रवाल)

पश्चिम के कई विश्वविद्यालयो में कला संस्कृति और मीडिया से संबधित पाठयक्रम चलाये जा रहे है जिनमें कला कैसे प्रतिबिम्बित की जाती है समाज, मेइसकी भूमिका क्या है ये पाठ्यक्रम समकालीन कला से सबंधित प्रासंगिक मुद्दो पर अन्तदृष्टि प्रदान करते है।

टी.डी.एस आलोक की पुस्तक अनामिका पब्लिशर्स पत्रकारिता एवं जनसंपर्क के अनुसार सांस्कृतिक पत्रकारिता पावन भावो और विचारो का एक संधान है मरणासन्न समाज के लिए सांस्कृतिक पत्रकारिता एक से संजीवनी का काम करती है।

अस्सी के दशक में धर्मयुग के कम्पादक धर्मवीर भारती ने एक साक्षात्कार के दौरान इस प्रश्न के उत्तर मे कहा था धर्मयुग संपादक के रूप में आपका ध्येय क्या है उन्होने कहा था साधारण पाठक गहरे सांस्कृतिक मूल्यो के प्रति जागरूक होकर जीवन के जटिल संघर्ष का सामना करने योग्य बनता चले पाठक को धर्मयुग से ज्ञान जीवनदृष्टि और आस्था मिले धर्मवीर धर्मवीर भारती का यह व्यक्तव्य सांस्कृतिक पत्रकारिता के वास्तविक स्वर को मिशन देता है।

राज्यसभा टी वी के कार्यक्रम मीडिया मथन में इस विषय पर परिचर्चा यही गई (2016) मीडिया मे कला संस्कृति कवरेज प्रतिभागी अशोक वाजपेयी भानु भारती कला समीक्षक कुलदीप सिह भरतनाट्यम नृत्यांगना उसमें चर्चा के बाद यही सामने आया लोगो की कलाओ में रूचि बडी है किन्तु मीडिया का सांस्कृतिक समाचारो, कार्यक्रमो की समीक्षा अखबारो ने ही

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

शुरू की थी आज उनके पास इसके लिए स्थान नहीं है बिना किसी सर्वेक्षण के ये मान लिया गया है कि इनके पाठक और दर्शक नहीं है।

प्रख्यात पत्रकार और साहित्यकार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना केअनुसार आम भारतीय समाज में चल रहे उत्सवों और आयोजनों में जीवन्तता और विशिष्टता के दर्शन होते है। इन धार्मिक सांस्कृतिक आयोजनों पर नजर ठहर जाती है। जरूरत है इस दायरे को बढाने की। वे चाहते थे सांस्कृतिक आयोजन सिर्फ मेले ठेले बनकर न रह जाये उनसे समाज को कुछ मिले। (पुस्तक चरचे और चरखे पृष्ठ-104)

राजस्थान के वरिष्ठ कला समीक्षक डा. राजेश व्यास ने अपनी पुस्तक कला समीक्षा में खुले मन से स्वीकार किया है कि हमारे देश में हिन्दी कला समीक्षा की लम्बी और समृद्ध परम्परा रही है। भारतीय कला मनीषियों ने समय पर इस और सटीक ध्यान दिया है पर आज बहुत ही कम हिन्दी समाचार पत्र और पत्रिकाऐ है जो कला समीक्षा को स्थान देते हो । कला की दुनिया से आम दुनिया को मिला पाने मे मीडिया कमजोर पड़ जाता है।

International Journal of Research; Jan 2000 ग्रन्थालय में डा स्मिता सहस्त्रबुद्दे ने अपने शोध पत्र संगीत के प्रचार प्रसार में संचार साधनो की भूमिका के सार मे लिखा है आधुनिक समय में समाचार पत्र संगीत के प्रचार प्रसार का एक महत्वपुर्ण साधन है। स्थानीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगीत जगत से जुड़ी हर सूचना कलाकारो की प्रस्तुति एव जीवनी समाचार पत्रों द्वारा बडी सरलता से पाठकों तक पहुंचती है। समाचार पत्र ही एक ऐसा साधन है जिसमें स्थायित्व है । न तो रेडियों को रीप्ले कर सकते है न ही टी वी को इसलिए समाचार पत्रों की उपयोगिता अभी दोनों के मुकाबले अभी ज्यादा है। आपके पास जब समय हो उठाइये पढ लीजिये जबकि रेडियो और टी वी के साथ ऐसा बिल्कुल संभव नहीं है। परिणाम स्वरूप समाचार पत्रों की खबरो को लिखने पढने में कोट कर सकते है जबकि रेडियो और टी वी पर सुनी बात को प्रमाण के अभाव में कोट करना मुश्किल होता है

पत्रकार और कला समीक्षक आलोक पराडकर ने अपनी पुस्तक कला कलरव में लिखा है - सांस्कृतिक पत्रकारिता का कार्य केवल कला गतिविधियों की सूचना देना भर नहीं है बल्कि उनकी श्रेष्ठता और सरोकर को परखना भी है।

कमलेश्वर अपने आलेख मनोरजन कर्ता की छवि और छाया से अलग में अखबारों के प्रबधन को लालायुगीन प्रबधन कहते है। कमलेश्वर लिखते है कि आज ठेकेदार और बिल्डर तक अखबार निकाल रहे है उन्हें पत्रकारिता का चाहे क ख ग ना पता हो परन्तु ये तो पता है कि पत्रकारिता सत्ता और शक्ति समीकरणों का स्रोत है। उनके अनुसार थे ऐसा ही है जैसे बदूंक फौजियों की बजाय डाकुओ के हाथ मे चली गई है। कमलेश्वर मनोरंजनकर्ता की छवि और छाया से अलग मीडिया वाद विवाद सम्पादन अनामीशरण बबल नटराज प्रकाशन नई दिल्ली 2009.

समस्या निर्धारण और शोध प्रश्न

जयपुर के हिन्दी समाचार पत्रों में सास्कृतिक लेखन के प्रति गंभीरता है या नहीं? क्या ग्लैमर प्रतिबद्ध कला लेखन पर हावी हो गया है? कलाओं के प्रचार प्रसार संरक्षण और विकास में समाचार पत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। बाज़ारवाद के इस दौर में मीडिया हाऊस इस पक्ष को लेकर उदासीन हुए है समाचार पत्रों में कला आयोजनो की रिपोर्टिंग कम हुई है स्तर गिरा है ये एक बडां सवाल है। क्या सांस्कृतिक पत्रकारिता में गंभीरता का अभाव है। सांस्कृतिक पत्रकारिता कला गतिविधियों की सिर्फ सूचना ही

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

नहीं देती बल्कि उनकी श्रेष्ठता और सरोकार भी परखती है जयपुर से प्रकाशित हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों में सांस्कृतिक पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्य क्या है? यह अध्ययन जयपुर के कला जगत और कला आयोजनों के प्रचार प्रसार में समाचार पत्रों की भूमिका की जाँच करता है। जयपुर सांस्कृतिक शहर है कला को प्रश्रय देने वाला शहर है इस सन्दर्भ में समाचार पत्रों की भूमिका पर सामग्री विश्लेषण के आधार पर विचार होगा।

हमारा देश सांस्कृतिक विपुलताओं का देश है। गायन बादन नृत्य संगीत नाटक चित्रकारी वास्तुशिल्य दस्तकारी थे सभी मनुष्य की सांस्कृतिक पहचान है। प्रस्तावित शोघ सांस्कृतिक समाचारों का अध्ययन करता है। मीडिया ओर कलाऐ एक दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई है ये दोनो एक दूसरे से खुराक प्राप्त करते है संचार माध्यम सांस्कृतिक रूपों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। पत्रकारिता अपने सांस्कृतिक परिवेश से पूर्ण रूप से प्रभावित होती है। समाचार पत्रों के आकार प्रकार ले आऊट प्रस्तुतीकरण सामग्री मे निरन्तर हो रहे परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन के ही परिचायक है।

प्रासंगिकता और अध्ययन क्षेत्र

समकालीन कलाऐ और कलाकार किसी भी समाज का दर्पण हैं। नए दौर की मांग है कि कलाओं के आम जन समूह जोडा जाये। ये सर्वविदित है कि समाचार पत्रों की सुर्खियां समकालीन इतिहास को निरूपित करती है। उत्सवों के शहर कलानगरी जयपुर के मौजूदा परिदृश्य में ये अध्ययन अत्यन्त प्रांसगिक है। अप्रत्यक्ष रूप से यह पर्यटन अभिवृद्धि और शहर की ब्रांडिंग से भी जुडा है। कला और कलात्मक आयोजनों के सन्दर्भ में ये अध्ययन समाचार पत्रों की भूमिका की पड़ताल करता है। इसमें जयपुर में सांस्कृतिक पत्रकारिता के वर्तमान परिदृश्य पर भी कलाकारों से साक्षात्कार किया गया है जिससे भविष्य में इस पर वृहद अध्ययन के लिए समंक एकत्रित हुये हैं। अध्ययन इसलिए भी प्रासंगिक है क्योकि इससे ज्ञात होता है कि अखबार की खबरों के जरिये कला उत्सवों को आम लोगो के बीच ले जाया जा सकता है। आज के परिदृश्य मे मीडिया के हर माध्यम की अपनी उपयोगिता और सीमाऐ है ऐसे मे समाचार पत्रों के सांस्कृतिक समाचारों का सुस्पष्ट विश्लेषण होगा। जनसंचार के बिना कलाऐ आगे नही बढ सकती इसे भी शोध के माध्यम से प्रायोगिक कसौटी पर परखा किया गया है । जयपुर साहित्य उत्सव, सार्फ सूफी महोत्सव, जयरंगम, पतंग उत्सव, तीज, गणगौर की सवारी, कला मेले विगत कुछ वर्षो में जयपुर की पहचान बन चुके है। इस सन्दर्भ में शोध से पाठकों की रूचि का भी सर्वेक्षण किया गया है । प्रस्तावित शोध जयपुर के विभिन्न विधाओं के कलाकारों के साक्षात्कार और हिन्दी समाचार पत्रों में कला संस्कृति के कवरेज तक सीमित है। (दो सर्वाधिक प्रसारित होने वाले हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशितहोने वाली सांस्कृतिक खबरो के माध्यम से पूरा किया किया गया है ।

अध्ययन का उद्देश्य

हम सभी जानते है कि किसी भी कला विधि के तीन महत्वपूर्ण पक्ष है कला, कलाकार और श्रोता] दर्शक। मीडिया सिर्फ कला के संवहन मे ही सहायक नही है वरन वह कलाकारो को प्रतिष्ठा प्रदान करता है और पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों में कलागत रूझान जगाता है। प्रस्तावित शोध के माध्यम से कलाओं के प्रचार प्रसार में समाचार पत्रों की भूमिका को समझने का प्रयास किया गया है। जयपुर शहर से प्रकाशित होने वाले प्रमुख हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों में कला संस्कृति से संबधित समाचारो का

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

प्रकाशन किया गया है। कलाओ के प्रचार प्रसार में समाचार पत्रों का अनुपम योगदान है। आज के परिप्रेक्ष्य में कलाओ को जनसाधारण तक पहुंचाने में समाचार पत्र सरल और उत्तम माध्यम है। समाचार पत्रों का कवरेज कला और कलात्मक आयोजनों के प्रति जनमानस के रूचि जगाता है। ये समाचार पत्रों का सांस्कृतिक दायित्व भी है। जयपुर शहर के सन्दर्भ मे जिसे उत्सवों की नगरी कहा जाता है इस संबंध में समाचार पत्रों द्वारा निभाये जा रहे दायित्व का अध्ययन करना इस शोध का उद्देश्य है।

कलाओ के प्रचार प्रसार में समाचार पत्रों के कवरेज की भूमिका का गहन अध्ययन करना प्रस्तावित शोध का मुख्य उद्देश्य है। शोध के माध्यम से समाचार पत्रों के सांस्कृतिक समाचारों की सामग्री विश्लेषण किया गया। साथ ही समाचार पत्रों के नियमित पाठकों पर इसके प्रभाव का भी गहराई से अध्ययन किया गया।

परिकल्पना - प्रस्तावित शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाऐं गई है।

1. समाचार पत्रों में कला आयाजनों का मीडिया कवरेज पर्याप्त है या नही जनसंचार के बिना कलाऐ आगे नहीं बढ सकती (मीडिया) समाचार पत्रो में कला आयोजनों के बेहतर कवरेज की वृहदतर संभावना है
2. समाचार पत्रों में कला संस्कृति से संबधित समाचारों का स्थान सिकुडा है। (कम हुआ है या बढा है।)
3. सांस्कृतिक समाचारों सें आम लोगों में कलागत रूझान सकता है ऐसे समाचार कला संख्या बढाते है।
4. सांस्कृतिक पत्रकार कला कलाकारो और कला दर्शकों के बीच सेतू का कार्य करते है।
5. सांस्कृतिक पत्रकार कलाओं के प्रति आम जन की राय बनाने में प्रभावी है
6. समाचार पत्रों में कला संस्कृति के समाचारों के प्रकाशन में बदलाव आया है।

शोध प्रविधियां

भारतीय कलाओं की विपुलता और विविधता की तुलना अंतरिक्ष से की जा सकती है जिसका कोई और छोर नहीं हैं। प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र जयपुर है इसलिए जयपुर के प्रमुख सांस्कृतिक आयोजनों का चयन किया किया गया है। जयपुर से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में उनके कवरेज का मूल्यांकन और विश्लेषण किया गया है। जयपुर में सर्वाधिक पाठक हिन्दी समाचार पत्रों के है अतः उन्ही का चयन शोध के लिए किया गया है। सर्वाधिक प्रसार संख्या दैनिक भास्कर और राजस्थान पत्रिका की है। अतः सामग्री विश्लेषण के लिए उन्ही का उपयोग किया गया है। इसके लिये दैनिक भास्कर और राजस्थान पत्रिका के जनवरी 2019 में प्रकाशित सभी सांस्कृतिक समाचारों का अध्ययन किया गया है। इसके अलावा 100 उत्तरदाताओं का चयन कर प्रश्नावली को शोध उपकरण क रूप में भरवाई गई है। इन उत्तरदाताओं में कलात्मक आयोजनों के दर्शक, श्रोता, कलाकार, सांस्कृतिक संवाददाता, संपादक, मीडिया शिक्षक और विद्यार्थी साथ ही कला समीक्षकों को लिया गया है।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

संकलित तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या

जन और कलाकारों की प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया प्रश्न	हाँ (%)	नहीं (%)	अन्य %
क्या आप हिंदी अखबार के नियमित पाठक हैं	95	2	3
जयपुर के हिन्दी समाचार पत्रों में सास्कृतिक लेखन के प्रति गंभीरता है या नहीं	70	20	10
कलाओं के प्रचार प्रसार संरक्षण और विकास में समाचार पत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है	75	20	5
सांस्कृतिक पत्रकार कलाओं के प्रति आम जन की राय बनाने में प्रभावी है	90	8	2
समाचार पत्रों में कला आयाजनों का मीडिया कवरेज पर्याप्त है या नही	75	20	5
क्या प्रदर्शन कला का समाचार पत्र कवरेज उचित है	70	25	5
सांस्कृतिक पत्रकार कला कलाकारो और कला दर्शको के बीच सेतू का कार्य करते है।	75	20	5
आज के परिपेक्ष्य में कलाओ के जनसाधारण तक पहुचाने में समाचार पत्र सरल और उत्त	92	4	4
कुल औसत	**80.25**	**14.875**	**4.875**

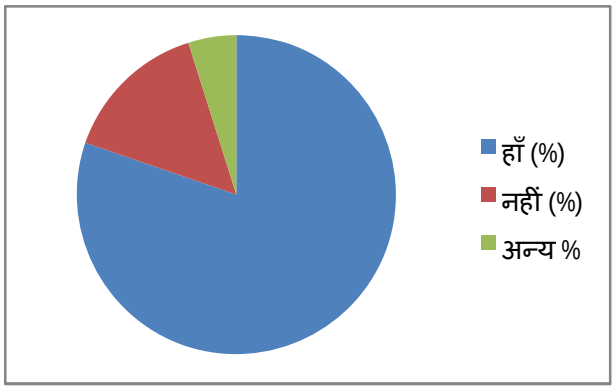

सामग्री विश्लेषण जयपुर के मुख्य समाचार पत्र (01/01/2019- 31/01/2019)

जयपुर का मुख्य समाचार पत्र	अनुपूरक पृष्ठों में समाचार की कुल संख्या	पूरक पृष्ठों में सांस्कृतिक समाचारों की कुल संख्या	पूरक पृष्ठों में सांस्कृतिक समाचारों की कुल संख्या (%)	पूरक पृष्ठों में प्रदर्शन कला समाचार की कुल संख्या	पूरक पृष्ठों में प्रदर्शन कला समाचार की कुल संख्या (%)
दैनिक भास्कर	435	127	29.1954023	60	13.79310345
राजस्थान पत्रिका	346	147	42.48554913	55	15.89595376
कुल औसत	390.5	137	35.08322663	57.5	14.72471191

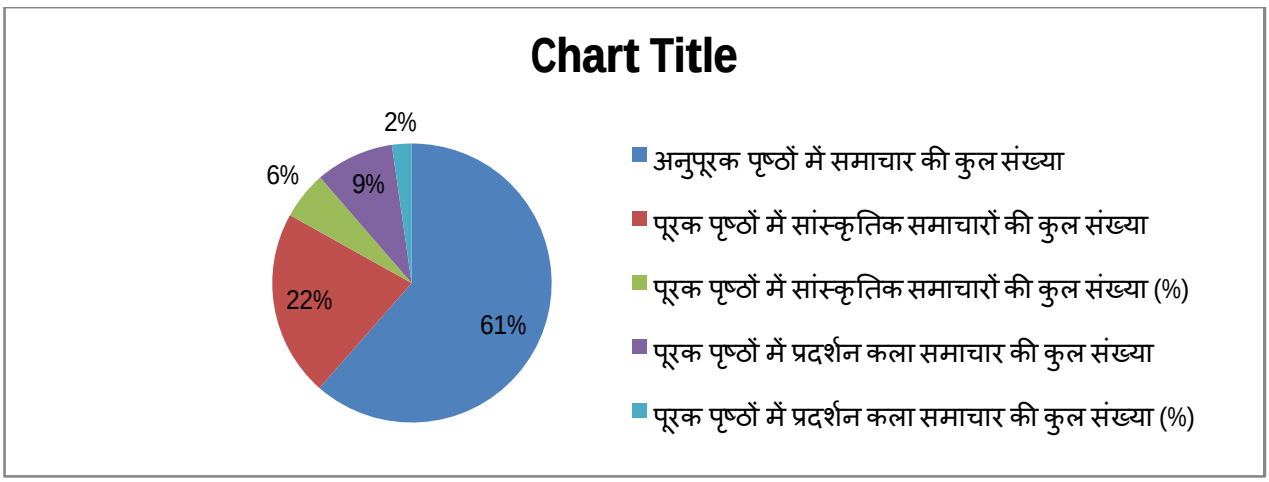

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

सामग्री विश्लेषण जयपुर के मुख्य समाचार पत्र (01/01/2019- 31/01/2019)

जयपुर का मुख्य समाचार पत्र	अनुपूरक पृष्ठों में प्रदर्शन कला का स्थान (वर्ग सेंटीमीटर)	अनुपूरक पृष्ठों में प्रदर्शन कला का स्थान (%)	अन्य पृष्ठों में प्रदर्शन कला का स्थान (वर्ग सेंटीमीटर)	अन्य पृष्ठों में प्रदर्शन कला का स्थान (%)	प्रदर्शन कला का कुल स्थान (वर्ग सेंटीमीटर)
दैनिक भास्कर	8266	80.73842547	1972	19.26157453	10238
राजस्थान पत्रिका	8606	83.94459618	1646	16.05540382	10252
कुल औसत	8436	82.34260615	1809	17.65739385	10245

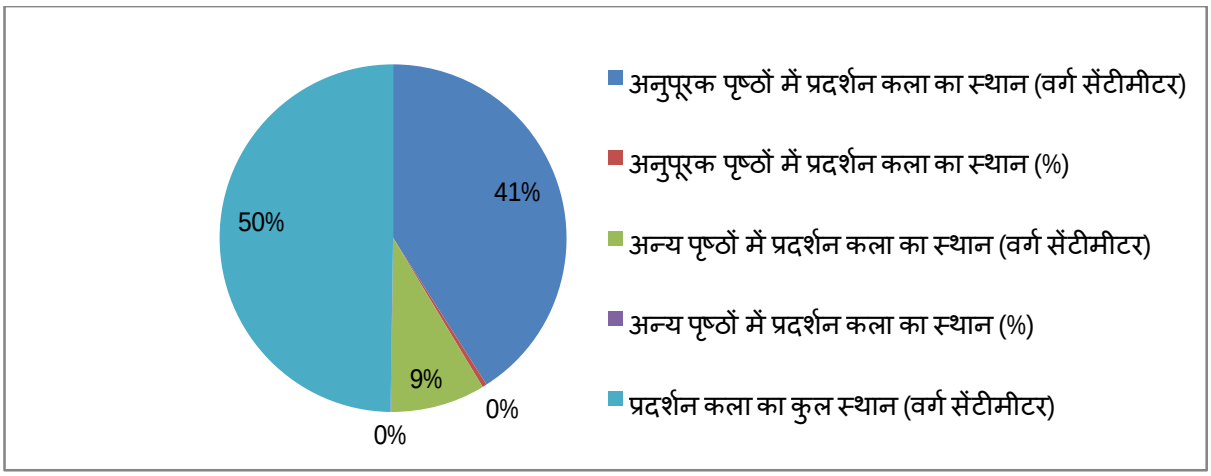

जन और कलाकारों की प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया प्रश्न	हाँ (%)	नहीं (%)	अन्य %
समाचार पत्रों में कला संस्कृति से संबधित समाचारों का स्थान सिकुडा है।	24	65	11
समाचार पत्रों में कला संस्कृति के समाचारों के प्रकाशन में बदलाव आया है।	20	65	15
क्या ग्लैमर प्रतिबद्ध कला लेखन पर हावी हो गया है?	40	50	10
बाज़ारवाद के इस दौर में मीडिया हाऊस इस पक्ष को लेकर उदासीन हुए है	45	40	15
समाचार पत्रों में कला आयोजनो की रिपेटिग कम हुई है स्तर गिरा है	35	53	12
क्या सांस्कृतिक पत्रकारिता में गंभीरता का अभाव है।	35	55	15
कुल औसत	33.17	54.67	13

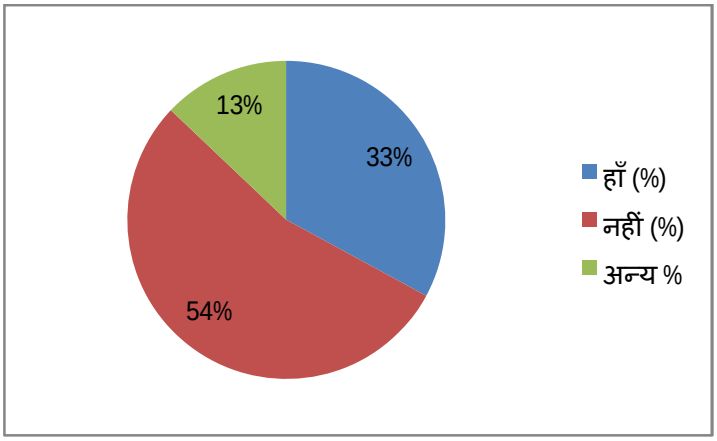

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

इस अध्ययन को हमने ऊपर प्रदर्शित किये गये ग्राफ और सारणियों के माध्यम से दर्शाया है जिससे स्पष्ट होता है-

- कि समाचार पत्र आमजन, कलाकार और दर्शकगण सभी आपस में जुड़े हुये हैं ऐसे में सांस्कृतिक पत्रकारिता का क्षेत्र व्यापक हुआ है।
- जयपुर के समाचार पत्रों में मंचीय कलाकारों पर लेख, समाचार फीचर उनके साक्षात्कार समय-समय पर प्रकाशित हो रहे हैं। गायन, वादन, नृत्य और अभिनय से जुड़े समाचार रंगीन चित्रों के साथ प्रकाशित हो रहे हैं।
- पाठकों ने स्वीकार किया है कि मंचीय कलाओं के आयोजन की जानकारी देने और सांस्कृतिक अभिरूचि परिष्कृत करने में समाचार पत्र सहायक सिद्ध हुये हैं। समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाले रंगीन पृष्ठों (सप्लीमेंट) का स्थान महत्वपूर्ण है। प्रायः मंचीय कलाओं से संबंधित समाचार इन्हीं में प्रकाशित होते हैं।
- सप्लीमेंट यानि की अनुपूरक परिशिष्ट स्थानीयता की जीवन शक्ति से भरे होते हैं। ये स्थानीय गतिविधियों के कवरेज में महत्वपूर्ण रोल अदा करते हैं।
- तकनीक के इस दौर में जहॉ पलक झपकते ही हमें देश दुनिया की खबरें मिल जाती हैं ऐसे में स्थानीय जानकारी के लिये आज भी पाठक समाचार पत्र को एक विश्वसनीय स्रोत मानते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष के रूप में मीडिया विशेषज्ञ डॉ के के रत्तू द्वारा कही गई यह बात महत्वपूर्ण है कि सांस्कृतिक विषयों की रिपोर्टिंग ही वह बुनियाद है, जो पत्रकारिता की रचनात्मकता को पुख्ता करती है। यह बात उन्होने उदयपुर में सांस्कृतिक पत्रकारिता पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में कही थी।

शोध से स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि जयपुर में दैनिक भास्कर समाचार पत्र के परिशिष्ट सिटी भास्कर की लोकप्रियता सबसे अधिक है। इसमें शहर में निरन्तर होने वाले कला आयोजनों की सूचना दी जाती है। बल्कि पाठकों में कलागत रूझान जगाने में भी ये काफी हद तक सफल रहा है। इसे कला समीक्षक सर्वेश भट्ट ने सांस्कृतिक पत्रकारिता को प्रयोगधर्मी आयाम दिया है। यहॉ वरिष्ठ संपादक पत्रकार एल.पी. पंथ का ये कथन प्रासंगिक है कि पत्रकारिता में विज्ञान की तरह कोई फार्मुला नहीं है । पत्रकार के सामने और चुनौतियां है लेकिन हर दिन ''सांस्कृतिक थकावट'' के दौर से गुजर रहें है उसमें पत्रकार पर यह दायित्व है कि वह आम आदमी के सपने को बचाने का प्रयत्न करें।

सन्दर्भ सूची

1. मास मीडिया और समाज, मनोहर श्याम जोशी 2014.
2. समकालीन पत्रकारिता मूल्यांकन और मुद्दो, राजकिशोर वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 1994.
3. मीडिया और हिन्दी बदलती प्रवृत्तियाँ, सम्पादन रवीन्द्र जाधव केशव मोरे वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
4. दिल का किस्सा, लीलाधर मण्डलोई।
5. कला समीक्षा, डा.राजेश व्यास।
6. कला कलरव, डा. आलोक पराडकर।
7. संचार माध्यमो का प्रभाव, ओम प्रकाश सिंह।
8. सन्नाटे मे चमकती आवाजे, अजीत राय, सांस्कृतिक पत्रकारिता साक्षात्कार पर आधारित वाणी प्रकाशन।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

9. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और मीडिया, डा. सौरभ मालवीय।
10. Suppement Journalion in India, Pooja Rana-2010.
11. Media catalyot for preserving and promoting local culture, Shilpa Jain.
12. Media and issues of responsibilityy, Mankendya katjw Chairman P.C.I. Sept 2016.
13. www.thehindu.com.
14. R.S.TV Media Manthan.
15. परम्परागत संचार - अस्तित्व के लिए संघर्षरत विशेष आलेख -डा. देवव्रत सिंह विभागाध्यक्ष जनसंचार विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय वि.वि.
16. शोध संचयन (पत्रिका) जनवरी 2010 डा. शशि भूषण कुमार शशि।
17. भारतीय कला समीक्षा - ऋतु जौहरी।
18. पत्रकारिता की खुरदरी ज़मीन - राकेश तिवारी।

© *Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.* **ISSN: 2581-3501**